

पॉल की तीर्थयात्रा

पत्नी के प्रति एक पति के अमर प्यार का यादगार उपन्यास



अर्चना पैन्वूली

‘राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार’ 2012 से सम्मानित लेखिका

ज़िन्दगी के उतार-चढ़ावों में तैरता-डूबता पॉल अन्ततः अपने जीवन की सार्थकता को एक बिन्दु पर स्थिर कर देना चाहता है। मन के भरपूर विचलन के बावजूद वह जिस यात्रा पर निकलता है, यात्रा-क्रम में जिन अनुभवों से गुज़रता है, जिन स्मृतियों को जीता है, जितने लोगों से टकराता है और अपने जीवन का जिस तरह पुनरावलोकन करता है, जिज्ञासु पाठक उपन्यास के पन्ने पलटते हुए उन सभी का साक्षी बनता है। धीरे-धीरे वह जैसे पॉल का सहयात्री हो जाता है

—डॉ. विजया सती
एसोसियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

उपन्यास मर्मस्पर्शी, जीवन के विविध आयामों का दर्पण और रोचक है। सभ्यता के इस दौर में यह परिवारों के स्वरूप और जीवन की नियति को लेकर एक चेतावनी भी है। कथा में दम है। वर्णनशैली में अद्भुत प्रवाह। पाठक को न केवल बाँधे रखने में सक्षम है बल्कि आत्मविश्लेषण के लिए भी प्रेरित करती है।

—सरोजनी नौटियाल
प्रिंसिपल राजकीय कन्या पाठशाला, चम्बा

वैवाहिक जीवन, तलाक, पुनर्विवाह, सौतेला पिता, सौतेले बच्चे, कानून, नियम, व्यवस्थाएँ, परंपराएँ अनेक पहलुओं की पेचीदगियों से जूझती पटकथा में आकर्षण है। मानव विचारों व भावनाओं की एक गहन अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।

—गीता जोशी
सहायक निदेशक, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
नयी दिल्ली

पॉल की तीर्थयात्रा

अर्चना पैन्थूली



राजपाल



ISBN: 9789350643938

प्रथम संस्करण: 2016 © अर्चना पैन्वूली
PAUL KI TEERTHYATRA (Novel) by Archana Painuly

राजपाल एण्ड सन्ज़

1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006
फोन: 011-23869812, 23865483, फैक्स: 011-23867791
e-mail: sales@rajpalpublishing.com
www.rajpalpublishing.com
www.facebook.com/rajpalandsons

मेरी ज़िन्दादिल माँ (सास)
देवेश्वरी देवी को सादर समर्पित

आभार

हम जीवन में किसी कार्य की योजना बनाते हैं तो प्रारम्भ से अन्त तक जिन व्यक्तियों का हमें सायास अथवा अनायास सहयोग प्राप्त होता है उसकी हमें प्रारम्भ में कल्पना नहीं होती। कार्य सम्पन्न होने पर हम उन व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता से भर जाते हैं जिन्होंने हमारे कार्य में न केवल रुचि ली अपितु अपना अमूल्य सहयोग देकर कार्य को सुन्दर से सुन्दरतम बनाने में हमारी सहायता की। इस परिप्रेक्ष्य में मेरे लिये सर्वप्रथम श्री डेरेक डे के सहयोग का उल्लेख किये बिना आगे बढ़ना सम्भव नहीं है। स्कॉटिश नागरिक व डेनमार्क निवासी श्री डेरेक डे ने भारत से अपना अनुवांशिक सम्बन्ध व पारिवारिक इतिहास मुझसे शेयर किया और इस उपन्यास में उसका उपयोग करने की मुझे इजाज़त दी।

भले ही मैं डेनमार्क में रह रही हूँ, जो इस उपन्यास की पृष्ठभूमि है किन्तु एक विशेष समुदाय के अंदरूनी परिवेश से जुड़े तमाम प्रश्नों, जिज्ञासाओं, जटिलताओं, संवेदनाओं, जीवन शैलियों व सांस्कृतिक विशिष्टताओं को गहराई से समझने की मुझे आवश्यकता थी। इस सम्बन्ध में मेरे सहयोगी श्री डेरेक स्कॉट व ऐना बेरुत मेरी जानकारी के सहज स्रोत बने रहे।

मैं आईटी एक्सपर्ट श्री अनिल कृष्णन की शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने पॉल की तीर्थयात्रा का नक्शा, जोकि उपन्यास का एक महत्वपूर्ण तत्व है, कम्प्यूटर पर बनाया।

मेरे लेखकीय जीवन में डॉ. विजया सती (एसोसियेट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय) एवं सरोजनी नौटियाल (प्रिंसिपल, जी.जी. आई.सी. चम्बा, टिहरी) का होना एक सौभाग्य है। इन दो साहित्य विशेषज्ञों की टीम ने न केवल उपन्यास का सम्पादन कर अपने असीम धैर्य का परिचय दिया, अपितु अपनी सारगर्भित टिप्पणियों द्वारा उपन्यास को अधिक प्रमाणिक बनाने में सहयोग दिया।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की सहायक निदेशक व राजभाषा मंजूषा की सम्पादक गीता जोशी एवं सुधा थपलियाल जैसे साहित्यिक अभिरुचि से परिपूर्ण संवेदनशील पाठकों की प्रतिक्रियाओं ने उपन्यास को जनापेक्षाओं के निकट पहुँचाने में मेरी सहायता की। उनके सुझाव उपन्यास-लेखन में सहायक रहे। मैं इन सभी के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरे जीवन का आधार व मेरे सबसे करीबी सलाहकार मेरे पति डॉक्टर ज्योति प्रसाद पैन्थूली के पारिवारिक सहयोग के बिना मेरे लिए कोई भी कार्य करना मुमकिन नहीं। उनका सहयोग निर्वचनीय है।

सौभाग्यवश पॉल की तीर्थयात्रा के प्रकाशन का दायित्व स्थापित एवं प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान राजपाल एण्ड सन्ज़ ने उठाया। उपन्यास को पाठकों के सम्मुख लाने का श्रेय वस्तुतः राजपाल एण्ड सन्ज़ की माननीया मीरा जौहरी जी को ही जाता है। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

अन्त में मेरे प्रिय पाठकों को मेरा आभार जो मेरे सबसे बड़े प्रेरणास्रोत हैं।

—अर्चना पैन्वूली

डेनमार्क

15.08.2015

क्रम

एक विशेष टेलीफोन
पदयात्रा एक अभियान
मिलना एक संयोग
माता-पिता से भेंट—एक कदम आगे
क्रिसमस—नई जिन्दगी की शुरुआत
पुनर्विवाह
हनीमून
विवाहित जिन्दगी
आईवीएफ—महँगी व थकाऊ प्रक्रिया
टूटा हुआ घर
गैर जिम्मेदाराना पूर्व पति
मानसून
थाईलैंड
मेरा पचासवाँ जन्मदिन
फिर तलाक
मैं उससे भागा नहीं था
एक सरनेम में क्या रखा है?
पुश्तैनी घर
वह फकीर मुझसे अधिक अमीर
रोगों का सम्राट—कैंसर
आत्महत्या एक बेतुकी मौत
करीना स्वयंवर
मृत्यु—अन्तिम शत्रु

छोटा सा था उसका आशियाँ
श्रद्धांजलि

एक विशेष टेलीफ़ोन

वह फ़ोन मेरे पास अप्रैल मध्य की एक शनिवार की सुबह आया था। सुबह से ही वह दिन कुछ अलग सा था। शनिवार—यानि वीकेन्ड होने के बावजूद मैं जल्दी उठ गया, और उठते ही मैंने अपना घर साफ़ कर लिया। लूसी आ रही थी, सो मैं चाहता था कि उसके आने से पहले ही घर साफ़ हो जाए।

अपने साफ़-सुथरे घर को कुछ पल में मंत्रमुग्ध निहारता रहा। मेरे घर के दो कमरे मेरे खानाबदोश जीवन के गवाह हैं। अलग-अलग समय में अलग-अलग व्यक्तियों से दान या उधार में मिले फर्नीचर के टुकड़े घर में बिखर एक विसंगति—बेमेलपन उत्पन्न करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे मेरी ज़िन्दगी से जुड़े पात्रों में परस्पर कोई संगति नहीं बैठती। सोफा-कम-बेड पूर्व-पत्नी नीना से मिला, उस पर बिछी लाल चदर माँ ने दी है। दीवान, एक दोस्त मकान बदलते समय दे गया था, यह सोच कर कि नये घर में वह नया फर्नीचर खरीदेगा। दीवार पर लगी पेंटिंग मेरी बहन जूलिया ने मुझे पिछले वर्ष क्रिसमस पर भेंट की थी। लिविंगरूम के कोने में रखी आरामदायक कुर्सी, जिस पर बैठ कर मैं मेडिटेशन करता हूँ, मेरी जर्मन मकानमालकिन ने मुझे दी है। गुरूर से बोली थी—“जर्मन-मेड है, ठोस व मजबूत है। इसका इस्तेमाल कर लो, जब तक इस घर में किरायेदार हो।”

किताबों का रैक पुराना किरायेदार छोड़ गया था। और किचन के आगे लगी छोटी-सी गोल मेज लूसी ने ऑनलाइन खरीद कर दी है। उससे यह नहीं देखा गया कि उसका बाप किचन की स्लेब पर खड़े-खड़े खाना खाता है। परन्तु...बुक रैक के ऊपर सजी मेरी दोनों बेटियों की मुस्कुराती तस्वीर मैंने स्वयं खींच कर फ्रेम में जड़ी है, इसलिए यह मुझे अपने घर की सभी वस्तुओं में सर्वाधिक प्रिय है।

खैर, घर का अभिप्राय फर्नीचर का ब्यौरा भर नहीं है। मुझे खुशी इस बात की है कि अब मेरा भी अपना एक घर है। पाँच महीने पहले ही यहाँ शिफ्ट हुआ हूँ। वायले झील के किनारे, वायलोसोपार्कन उपवन में अवस्थित यह आवासीय इमारत जर्मनों द्वारा निर्मित है, इसलिए यहाँ की अधिकतर नेमप्लेट पर सरनेम जर्मन हैं। जर्मन-मेड कुर्सी की तरह यह जर्मन-मेड इमारत भी सुदृढ़ है। घर का किराया मेरे लिये थोड़ा ज़्यादा है। लेकिन एक सुविधाजनक स्थान में एक समुचित निवास जीवन को काफ़ी कुछ सुव्यवस्थित रखता है। सबसे बड़ी बात लूसी व ग्रेसी जब मेरे पास आती हैं तो उनके लिए एक कमरा है। घर परिवार की एक संस्था